ORIGINAL RESEARCH PAPER

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उत्पन्न हिन्दू – मुस्लिम साम्प्रदायिक विचार

KEY WORDS: हिन्दू साम्प्रदयिकता, मुस्लिम साम्प्रदायिकता, ब्रिटिश नीति , धार्मिक अलगाववादी

प्रियंका राय

Jiwaji University, Gwalior Madhya Pradesh

ABSTRACT

The Hisory of communalism in the 19th century is the Hisory of British policy in the india.In which the English Empirialism is one side of it and the social economy of the country is its other side.Communalism is the mindset of Narrow Contracion and Division is Based on mentality that can do many parts of a Nation.The National Movement in india was organized by the nationalists the British tried their best to thwart the Natinal movement with weapons of Communalism. However duo to the presence of communal elements (Fundamentalist Hindu and Muslim) Already in India, they were successful in this.Apart from this, on the economy ,social Backword and problems like horrific unemploement,the British had to increase the Communicability and provided an opportunity to encourage Separatist Tendencies.

ब्रिटिश भारत के इतिहास में हिन्दू – मुस्लिम साम्प्रदायिकता का उदय एवं उसका विकास तथा भारतीय राजनीति में उसकी भूमिका एक महत्वपूर्ण अध्याय हैं। सम्प्रदायवाद मूल रूप से आधुनिक विचारधारा एवं राजनीतिक प्रवृति हैं। इसकी जड़े आधुनिक औपनिवेशिक आर्थिक, सामाजिक ढ़ाचे में थी यह केवल भ्रांति मात्र है। कि साम्प्रदायिकता धार्मिक ढ़ाचे में ही निहित होती है। इतिहास में ऐसे अनेक धार्मिक व्यक्ति है जो प्रबल रूप से धर्मनिरपेक्ष होते थे अर्थात् अन्य धर्मो के प्रति भी निष्ठाभाव रखते थे। ऐसे अनेक व्यक्तियो के उदाहरण इतिहास में दिए गए है। महात्मा गांधी जो कि गहन रूप से धार्मिक व्यक्ति थे। पर उनमें सभी धर्मों के प्रति सहानुभूति थी। इसके अलावा हिन्दू राष्ट्रवादी सिद्वान्त को मानने वाले पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना, जो कटटरपंथी मुसलमान नही थे । जैसे कि लुई फिशर ने कहा है – कि जिन्ना जो अधार्मिक है धार्मिक राज्य की चाह रखते है हिन्दू महासभा या हिन्दू रीति के अध्यक्ष वी.डी. सावरकर भी नास्तिक थे, परन्तु इन सभी में साम्प्रदायिकता की भावना कही भी नजर नही आती । मात्र धर्म या जाति सांप्रदायिकता को जगाने में सहायक नही हो सकती बल्कि तत्कालीन अनेक कारण इसकी जड़े खोदने में सहयोगी रहे है। चूंकि कुछ लोग किसी एक विशेष धर्म को मानते है। इसलिए उनके हित समान प्रतीत होते है। पर व्यवहारिक तौर पर ऐसा नही है। संप्रदायवाद को सरल शब्दों में परिभाषित करे तो विभिन्न धर्मों के अनुयायी एवं विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के हित परस्पर विरोधी होते है उनके पार्थिव हित पूर्णतः भिन्न होते है। और ये सारी भिन्नता प्राकृत नही कही जा सकती । इसके बीज समाज को विभाजित करने वालों अर्थात् संप्रदायवादी द्वारा बोए जाते है। 1870 से पहले भारत में साम्प्रदायिक विचारधारा एवं साम्प्रदायिक राजनीतिक जैसे कोई चीज नही थी। भारत में सांप्रदायिकता के बीज अंग्रेजों द्वारा डाले गए । अंग्रेजों का एक मात्र उद्देश्य हिन्दू मुस्लिम एकता को तोड़ना इसके लिए उन्होने साम्प्रदायिकता का रास्ता चुना । जब अंग्रेजों ने देखा कि 1857 ई. के विद्रोह में हिन्दू मुस्लिम कंधे से कंधा मिलाकर लड़े । मुसलमानों ने हिन्दूओं से अधिक उत्साह दिखाया । यही वह समय था जब देशवाशियो को राष्ट्रीय भावना उत्पन्न हो रही थी। सभी धर्मों के लोग एक जुट होकर अंग्रेजों को देश से बहार खदेड़ने के लिए तैयार थे इस विद्रोह में अधिकतर नेतृत्व मुसलमानों ने किया जिनके साथ पूरा जनमानस था उनमें व्याप्त राष्ट्रीय भावना को देख अंग्रेजों को अपने साम्राज्य के प्रति भय एवं खतरा महसूस हुआ उन्हें लगा यदि हिन्दू – मुस्लिम एकजुट होकर हमारी विरोधी बन गई तो हमारा यहां शासन करना असंभव हो जाएगा। यह वह दशक था जब अंग्रेजों का दृष्टिकोण मुसलमानों के प्रति बदला और राष्ट्रीय खतरे से निपटने हेतु दोनो समुदाय को आपसी विरोधी बनाकर आमने सामने खड़ा कर दिया। समकालीन लेखकों अशोक मेहता , पटवर्धन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, तथा अन्य ने 'साम्प्रदायिकता त्रिकोण' का सिद्वान्त प्रस्तुत किया जिसमें हिन्दू – मुस्लिम के बीच अंग्रेजों ने स्वयं को खड़ा कर दिया तथा त्रिभुज का निर्माण किया। इस त्रिकोण में अहम भूमिका मिडिल पार्ट अर्थात् अंग्रेजों की रही । यह त्रिकोण स्पष्ट करता है कि साम्प्रदायवादी शासकों ने सरकारी षड़यंत्रों एवं अन्य नीतियों से साम्प्रदायिक बटवारे को बढ़ावा दिया । यह सत्य है कि देश में इसके शीघ्र फैलने से लोगो के मन में अन्य धर्मों के प्रति उदासीनता की भावना जाग्रत होने लगी। तथा समाज में यह उदासीनता देश के विभाजन के बाद भी विभिन्न समुदायों के बीच बनी रही। साम्प्रदायिकता एक दीमक की तरह है जहां लग जाती है फिर उसे अन्दर से खोखला एवं कमजोर करने में कोई कसर नही छोड़ती । समकालीन हिन्दू एवं मुस्लिम के अलावा अन्य अपने धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठाभाव रखते थे अंग्रेजो ने इसे सुअवसर माना और पोस्टरों , पुस्तक – पत्रिकाओं , प्रेस , साहित्य द्वारा साम्प्रदायिक विचार फैलाये तथा सार्वजनिक मंचों से साम्प्रदायिक घृणा वाले भाषण दिये एक धर्म के लोगो को दूसरे धर्म के लोगो से भिड़ाने उन्हें परस्पर विरोधी बनाने का भरसक प्रयास किया गया। ब्रिटिश नौकरशाहों की नीतियों से हिन्दू साम्प्रदायिकता का भी जन्म हुआ था हिन्दूओं में भी साम्प्रदायवाद की तस्वीर उजागर होती दिखी । साम्प्रदायिकता ऐसी मान्यता है जिसमें धर्म समाज का आधार तथा समाज के विभाजन की आधारभूत इकाई तैयार करती है। 19 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब उर्दू के स्थान पर हिन्दूओं द्वारा हिन्दी को शासकीय भाषा के रूप में प्रयोग के किए जाने की मांग प्रस्तुत की गई तब उत्तर – पश्चिमी प्रांत के लेफ्टिनेट गर्वनर एन्थोनी मेक्डोनल ने हिन्दी को न्यायलों में शासकीय तौर पर स्वीकार कर लिया जिसमें मुस्लिम समुदायों में हिन्दूओं के प्रति विरोध की भावना व्याप्त हो गई । हिन्दू सम्प्रदायवादियों ने एक ऐसे राज्य की वकालत की जो केवल हिन्दू संस्कृति , हिन्दू धर्म और हिन्दू भाषा को महत्व दे । इसी दशक में हिन्दू जमीदारों , सूदखोरों , मध्यवर्गीय हिन्दूओं ने मुस्लिम विरोधी भावनाओं को फैलाने तथा भड़काने का काम किया । इनके मन में था कि मध्यकाल में निरंकुश मुस्लिम शासक तथा उनके उत्पीडन से हमें अंग्रेजों ने मुक्ति दिलायी कुछ हिन्दू लेखकों एवं राजनीतिक कार्यकताओं ने मुस्लिम सांप्रदायिक विचार को दोहराया एवं अंग्रेजों को 'मुक्तिदाता' मानकर उनके ऊपर अनेंक लेख प्रकाशित किए । जब ये लेख आम जनता के हाथ में आते तो हिन्दू जनता के मन में यह भय होता कि देश में वही मुस्लिम शासन व्याप्त न हो जाए जिससे अंग्रेजों ने हमे मुक्त कराया । तथा मुस्लिम जनता में ये लेख हिन्दू विरोधी भावना का विकास करने में सहायक रहे । मुस्लिम साम्प्रदाय में बहुसंख्यक लोग रूढ़िवादी प्रवृति के थे। वे अपनी परंपरागत शिक्षा को श्रेष्ठ मानते एवं उसमें कोई परिवर्तन नही चाहते थे। जिससे वे ब्रिटिश भारत में सरकारी नौकरी के उच्च पदों से वंचित रहते थे तथा हिन्दूओं की अपेक्षा इनकी आर्थिक दशा अधिक खराब होती गई । मुस्लिम हिन्दूओं की अपेक्षा स्वयं को पिछड़ा समझने लगे उनमें असंतोष की भावना उत्पन्न होने लगी तथा उसमें अंग्रेजों द्वारा मुसलमानों को भड़काने का काम आग में चिगांरी जैसा था । यद्यपि धार्मिकता , साम्प्रदायिकता को बहुत ज्यादा प्रोत्साहन करने का मूल कारण नहीं थी। किन्तु भारत जैसे देश जहां शिक्षा का अभाव था, लोगों में बाह्य जगत संबंधी चेतना जाग्रत भी नही हुई थी। उनको जैसा पक्ष दिखाया या सुनाया जाता उसी पर विश्वास करते लोगो में तार्किकता व्याप्त नही थी । इसीलिए धार्मिकता ने साम्प्रदायिकता के लिए उत्प्रेरक का कार्य किया धर्म के नाम पर भारत के किसी भी सम्प्रदाय को भड़काना अंग्रेजों की रणनीति बन गई थी। इस समय हिन्दू एवं मुसलमान दोनो ने अनेक सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आंदोलन चलाए परन्तु उन्होने इन आंदोलनों को अपने अपने समुदाय तक सीमित रखा। बंगाल में 1870 में ब्रह्म समाज की स्थापना , हिन्दू महासभा की स्थापना, इन संस्थाओं की उपस्थिति से मुस्लिम साम्प्रदायिकता की राजनीति को और अधिक विस्तार एवं मजबूती मिली । तथा मुसलमनों का 'बहावी आन्दोलन' अहमिया आन्दोलन 1889 ई., देवबंद स्कूल की स्थापना जिसका मुख्य उद्देश्य मुस्लिम सम्प्रदाय के लिए धार्मिक नेता तैयार करना था इन व्यक्तिगत आंदोलनों ने धर्म के उग्र रूप को चित्रित किया तथा साम्प्रदायवाद को बढ़ावा देने में इन व्यक्तिगत आंदोलनों का भी सहयोग रहा धर्म के नाम पर आंदोलन चलाना एवं उसका प्रचार – प्रसार करना ऐसा प्रतीत होता है। कि वे अपने – अपने धर्म को श्रेष्ठ एवं एक – दूसरे के धर्मों की अप्रत्यक्ष रूप से उपेक्षा कर रहे हो । बंगाल के कलकत्ता के हुये हिन्दू – मुस्लिम के बीच 1891 ई. , 1896 ई. तथा 1897 ई. में साम्प्रदायिक दंगे अंग्रेजों की सांप्रदायिक नीति का परिणाम रहा जिसे वे स्वंय भी काबू नही कर पाये ।

सर सैयद अहमद खां ने मुस्लिम साम्प्रदायिकता की नींव डाली । उन्होने धार्मिक अलगाववाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया वे एक शिक्षाशास्त्री के साथ महान समाज सुधारक भी थे परन्तु उनके विचार बाद में रूढ़िवादी हो गए जिसका असर भारतीय राजनीति में सम्प्रदाय के रूप में पड़ा उन्होने मुस्लिम सम्प्रदाय को बताया कि उनके और हिन्दूओं के पार्थिव हित एकदम अलग–अलग है साम्प्रदायिक विचारधारा को सबसे पहले उन्होने ही फैलाना तथा सार्वजनिक मंच पर भाषण के रूप में देना प्रारंभ किया उन्होने मुसलमानों को समझाया कि ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी से ही उनके हितो की पूर्ति हो सकती है। उनके विचार हमेशा राष्ट्रवादी नेताओं से टकराते थे जब सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई चूंकि इस संस्था में बहुसंख्यक हिन्दू थे । तथा वे मुस्लिम सदस्यों को दबाकर रखेगें इस धारणा से उन्होने इस संस्था का विरोध किया उनका मानना था कि भारत एक हिन्दूवादी देश है। अधिकतर जनसंख्या हिन्दू है मुस्लिमों की संख्या उनके आगे बहुत कम है वे मुस्लिमों को एकजुट कर हिन्दू बहुल देश में मजबूत करना चाहते थे। ताकि वे हिन्दूओं की शक्ति के आगे कमजोर न लगे इसीलिए वे राष्ट्रवादी हिन्दू नेताओं की हर बात को नकारते रहे उनके निर्णय की अवहेलना करते रहे अंग्रेजों का प्रमुख मकसद यही था जिसे सर सैयद अहमद खां ने पूरा किया । अहमद खां ने अंग्रेजों के समक्ष अपनी बात इस प्रकार प्रस्तुत की – मुसलमान हृदय से उनके समर्थन में होगें बस वो थोडी सहानुभूति मुस्लिम जनता के साथ रखे तथा उनके हित के लिए कोई कार्य कर मुस्लिम जनता का भरोसा प्राप्त कर सकते हैं अंग्रेजों ने भी यही रास्ता उचित समझा तथा मुस्लिम के हितैसी बन उनका समर्थन करने के पक्ष में हो गए क्योंकि वे भारतीयों के विरूद्ध मुस्लिम साम्प्रदायिकता का प्रयोग करना चाहते थे। जिससे अंग्रेज अपने स्वार्थों को पूरा करते रहे । तथा तटस्थ रहकर सर सैयद अहमद खां की हिन्दू विरोधी कार्यों में पूर्ण सहयोग देते रहे वही अंग्रेजों की राष्ट्रविरोधी नीति हो या हिन्दू सभाओं का बहिस्कार करना हो, सैयद अहमद खां सहयोग देते । इस तरह अंग्रेज एवं अहमद खां दोनों एक – दूसरे के साथ केवल अपने स्वार्थ हितों को पूरा करने हेतु सहयोग देते रहे जिससे साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला । यद्यपि कांग्रेस की स्थापना अंग्रेजों के सहयोग एवं सहमति से हुई थी परन्तु जब कॉंग्रेस के सदस्य उनके द्वारा निर्देशित उद्देश्य से कार्य नही कर रहे थे एवं ब्रिटिश सरकार की कांग्रेस के मंच से खुली आलोचना करने लगे तब ब्रिटिश सरकार का रूख कांग्रेस

विरोधी हो गया इस पर सैयद खां ने कांग्रेस पर हमले और तेज कर दिय उसे हिन्दू एवं बंगालियों की संस्था कहा, मुसलमानों को कांग्रेस के सदस्य बनने से रोकने से प्रयास किया इसके साथ मुस्लिमों की पृथक राजनीति के लिए उन्होने मुस्लिम जागरण आंदोलन अर्थात् अलीगढ़ आंदोलन भी चलाया जिसका उद्देश्य कंग्रेस की गतिविधियों का विरोध करना एवं मुस्लिमों को हिन्दूओं से अलग राजनतिक रूप से संगठित करने का उनका उद्देश्य गलत नही कहा जा सकता परन्तु उनका रास्ता गलत था और गलत था उनको अंग्रेजों का सहयोग जो केवल अपने साम्राज्य को यहां दृढ़ करने के लिए हिन्दू मुस्लिम जनता का प्रयोग कर रही थी। सैयद अहमद खां, बद्रूद्दीन तैयबजी ने मुस्लिमों में आधुनिक शिक्षा का प्रसार भी किया परन्तु तब भी मुस्लिम शिक्षितों की संख्या अन्य शिक्षित सम्प्रदाय की तुलना में बहुत कम थी साम्प्रदाय धर्म पर आधारित सामाजिक तथा राजनीतिक पहचान की एक विचार धारा है जो समाज को धर्म के आधार पर राजनीतिक रूप में बांटती है। इसीलिए अंग्रजों ने देश में व्याप्त हो रही राष्ट्रीय भावना के विकास को अवरूद्ध करने के लिए 'फूट डालों और राज करो' की नीति अपनाई । तथा भारतीय राजनीति में संप्रदायवादी अर्थात् अलगाववादी प्रवृतियों को बढ़ाया । मुस्लिम संप्रदायों के सहयोगी के रूप में आगे आए मुसलमान जमीदारों, किसानों, व्यापारियों, नवशिक्षितों को अपने पक्ष में लेना शुरू किया मुसलमानों को भड़काया गया कि उनके हित हिन्दूओं से किस प्रकार अलग है? अंग्रेजों ने धार्मिक आधार पर भारतीय समाज को बांटने का जो प्रयास किया उसमें वे सफल भी हुए अलगाववाद की उस नीति से भारत देश दो संप्रदायों हिन्दू – मुस्लिम में विभाजित हो गया समाज में यह एक ऐसी लकीर थी जिसने देश को ही नहीं बलिक इंसानों को भी बांट दिया। इसके अलावा अंग्रेजों ने भारतीय समाज में जातियों में ऊंच – नींच की भावना को भी हवा दी जबकि वे स्वयं ऊंच – नीच के भेदभाव को नही मानते थे । परन्तु अपने स्वार्थवश उन्होने यह नीति भी संप्रदाय के रूप में अपनाई । गैर ब्राह्मण वर्ग को ब्राहम्ण वर्ग के एवं निचली जातियों को ऊंची जातियों के खिलाफ करने का प्रयास किया गया निचली जातियों को भड़काया गया कि ऊंची जातियों द्वारा उनका शोषण किया जा रहा है। चूंकि अंग्रेज ये बात अच्छे से जान चुके थे कि भारतीय जनता अशिक्षित के साथ – साथ भोली भी है। उन्हें जैसा दिखाया, सुनाया जाएगा वे उसे ही सच मानेगे उनके लिए धार्मिक संप्रदाय के लोगो को एक दूसरे के खिलाफ करना आसान हो गया था ।

अंग्रेजों द्वारा हिन्दू और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक फूट डालने के लिए सन् 1905 में बंगाल विभाजन इसी उद्देश्य से किया गया । बंगाल का विभाजन करना अंग्रजों के लिए कुछ हद तक फायदेमंद रहा क्योकि कट्टर हिन्दू – मुस्लिम जनता अंग्रेजों के बहकावे में आकर अपना हित समझकर विभाजन को स्वीकार करने लगे। सामप्रदायिकता वह आग है। जो एक देश, एक राज्य के टुकड़े कर उनमें स्वार्थता की भावना का विकास कर एकता एवं भाईचारे को खत्म कर देती है दो जातियों या दो सम्प्रदायों को आपस में भिड़ाने का काम साम्प्रदायवाद द्वारा किया जाता है। भारत में इसका प्रयोग पहले कभी इतनी बर्बरता से नही किया गया जैसा अंग्रेजों ने भारत पर शासन करने एवं अपने साम्राज्य को सुरक्षित करने के लिए एक राज्य को दो हिस्सों में धर्म के आधार पर बांटकर इस्तेमाल किया । बंगाल को पूर्वी बंगाल मुस्लिम बहुल क्षेत्र तथा पश्चिमी बंगाल हिन्दू बहुल क्षेत्र आर्थत एक प्रांत को दो धार्मिक प्रांतों में विभाजित किया गया। साम्प्रदायिकता के उफान का भारतीय समाज के सभी समुदायों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा अनेक हिन्दू , हिन्दू सांप्रदायिक तथ अनेक मुस्लिम , मुस्लिम सांप्रदायिक विचारों में बंट गए वे अपने – अपने हितों को सर्वोपति समझने लगे । समकालीन अनेक अंग्रेज इतिहासकारों ने हिन्दू – मुस्लिम फूट को बढ़ावा देने तथा भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींब मजबूत करने के लिए भारतीय इतिहास की व्याख्या ऐसे प्रस्तुत की जिससे साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिले । उन्होने प्राचीन भारतीय इतिहास को हिन्दुकाल एवं मध्यकालीन भारतीय इतिहास को मुस्लिम काल की संज्ञा दी। तथा इन दोनो कालों के बारे में अनेक लिखे भी लिखे मध्यकालीन भारत में मुगलों एवं हिन्दू शासकों के बीच हुए संघर्ष को उन्होने हिन्दू– मुस्लिम संघर्ष का नाम देकर लेख प्रस्तुत कर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया।

अतः 1857 की लड़ाई में दोनो समुदाय को एक साथ स्वयं के विरूद्ध लड़ता देख एवं अंग्रेजों ने धार्मिक एवं राजनीतिक पृथकरण की नीति अपनाई । साम्प्रदायिकता के बीज बोकर हिन्दू धर्म एवं मुस्लिम धर्म को हिन्दू सम्प्रदाय तथा मुस्लिम सम्प्रदाय में परिवर्तित कर दिया। उनके डाले गए बीज ने बड़े होकर भारत को द्वि – राष्ट्रो में विभाजित कर दिया तथा हिन्दू – मुस्लिम के बीच एक विभाजन लकीर जो न तो प्राचीन भारत एवं मध्यकालीन भारत में रही 19वी शताब्दी में खिंच गई । और अंग्रेजों के इस प्रयास में रूढ़िवादी साम्प्रदायिक विचार रखने वाले हिन्दू एवं मुस्लिम दोनो सहयोगी रहे। हां यहां साम्प्रदायिक समस्या का केन्द्र धर्म जरूर रहा परन्तु धर्म को आस्था के रूप में नहीं बल्कि राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया गया । और अगर यह कहा जाए कि ब्रिटिश इतिहासकारों एवं भारतीय इतिहासकारों के द्वारा सम्प्रदावादी लेखन से भी दोनो समुदायों के बीच द्वेष बढ़ता गया यह कहना भी उचित प्रतीत होता है। क्योकि अकेले अंग्रेज विदेशी धरती पर अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने के सपने नही देख सकते । उनको प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष रूप से देश के धर्मान्ध लोगो का सहयोग प्राप्त होता रहा।

संदर्भ

1. अन्टाइल्ड, प्रथम अध्याय साम्प्रदायिकता : ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पृष्ठ 3
2. अन्टाइल्ड, प्रथम अध्याय साम्प्रदायिकता : ऐतिहासिक वही पृष्ठ 4
3. विपिनचन्द्र, आधुनिक भारत का इतिहास 2009 पृष्ठ 255
4. विपिनचन्द्र, आधुनिक भारत का इतिहास 2009 पृष्ठ 257
5. विकीपीडिया डॉट
6. अरविंद कुमार पोरवाल, डॉ संजय कुमार त्रिपाठी पृष्ठ 386
7. विपिन चन्द्र आधुनिक भारत का इतिहास 2009 पृष्ठ 267
8. विपिन चन्द्र आधुनिक भारत का इतिहास 2009 वही पृष्ठ 267
9. अरविन्द कुमार पोरवाल डॉ संजय कुमार त्रिपाठी पृष्ठ 431
10. अरविन्द कुमार पोरवाल डॉ संजय कुमार त्रिपाठी वही पृष्ठ 431
11. विकीपीडिया